स्नातकोत्तर हिन्दी

PART- 1,पंचम पत्र

हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास)

हिन्दी उपन्यास -उपन्यास दो शब्दों - उप+न्यास से मिलकर बना है । उप अर्थात समीप तथा न्यास अर्थात थाती । इस आधार पर हम कह सकते हैं कि उपन्यास मूल रूप से मनुष्य से जुड़े हुए स्थितियों का वर्णन है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उपन्यास की मूलभूत विशेषता का वर्णन करते हुए लिखते हैं - "जन्म से ही उपन्यास यथार्थ जीवन की ओर उन्मुख रहा है पुरानी कथा आख्यायिका से वह इसी बात में भिन्न है । वे (पुरानी कथा -आख्यायिकाएँ)जीवन के खटकने वाले यथार्थ के संघर्षों से बचकर स्वप्नलोक की मादक कल्पनाओं से मानव को उलझाने बहकाने और फुसलाने का प्रयत्न करती थीं, जबकि उपन्यास जीवन की यथार्थताओं से रसखींचकर चित्त- विनोदन के साथ ही साथ मनुष्य की समस्याओं के सम्मुखीन होने का आवाहन लेकर साहित्य क्षेत्र में आया था। उसके पैर ठोस धरती पर जमे हैं और यथार्थ जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों से छनकर आने वाला 'अव्याज मनोहर' मानवीय रस ही उसका प्रधान आकर्षण है ।" उपन्यास के संबंध में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद लिखते हैं-" मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानता हूं मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है ।"

उपन्यास लेखन की परंपरा को अध्ययन की दृष्टि से निम्नलिखित बिंदुओं के तहत देखा जा सकता है-

(क)प्रेमचंद पूर्व उपन्यास

(ख)प्रेमचंदयुगीन उपन्यास

(ग) प्रेमचंदोत्तर उपन्यास

(क) प्रेमचंद पूर्व उपन्यास - हिंदी साहित्य के सबसे बड़े आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं अन्य विद्वानों ने लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु'(1882ई.) को हिंदी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास माना है। प्रेमचंद पूर्व के हिंदी उपन्यास में दो प्रवृतियां सामने आई हैं - मनोरंजनात्मक प्रवृत्ति एवं सुधारवादी प्रवृति । मनोरंजन के साथ-साथ सुधार की प्रवृत्ति परीक्षा गुरु में पहले पहल दिखी। इस उपन्यास का नायक मदन मोहन नामक एक व्यापारी है ।मदन मोहन बुरी संगत में पड़कर बुरा बनता है । प्रदर्शन प्रियता, प्रशंसा प्रियता उसकी कमजोरियां हैं यही कमजोरियां उसे खा जाती है और अपने सच्चे मित्र ब्रजकिशोर से अलग करती है । चुन्नीलाल, शंभूदयाल,बैजनाथ और पुरुषोत्तम दास जैसे कपटी और खुशामदी लोग उसके करीब आते हैं जिसके कारण वह दलदल में फंसता चला जाता है ।जब पश्चात के सिवा कुछ नहीं बचता तब उसका सच्चा मित्र ब्रजकिशोर उसे दलदल से निकालता है और उसे अपनी गलती का अहसास करवाता है ।परीक्षा गुरु के पहले भी कुछ उपन्यास प्रकाशित हुए थे, जैसे- श्रद्धा राम फुलौरी कृत 'भाग्यवती'(1877ई.) पंडित बाल कृष्ण भट्ट कृत 'रहस्यकथा'(1879ई.),पंडित गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी'(1870ई.), 'वामा शिक्षक'(1872ई.) आदि, किंतु औपन्यासिक अंतर्वस्तु और शिल्प संधान के लिहाज से इसमें कमी दिखती है । प्रेमचंद पूर्व के उपन्यासों में तिलिस्मी,अय्यारी की एक विशेष प्रवृत्ति देखने को मिलती है जो देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों में भरा पड़ा है ।देवकीनंदन कृत्य 'चंद्रकांता' एवं

'चंद्रकांता संतति' की लोकप्रियता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि कई गैर हिंदी भाषियों ने भी इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी । इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद पूर्व के उपन्यासों में कौतूहल पैदा करने की एक विशेष प्रवृति है । इस युग अन्य प्रमुख उपन्यासों में - गोपालराम गहमरी कृत 'सरकटी लाश','जासूस की भूल'किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'तारा' आदि हैं ।

(ख)प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास - हिंदी उपन्यासों में प्रेमचंद तिलिस्मी और ऐयारी से इतर जीवन की विडंबनाओं से गुजरते हैं । वे आम आदमियों के बीच से ही सामान्य चरित्र निकालकर उसे क्लासिक चरित्र बना देते हैं । प्रेमचंद के उपन्यासों में गोदान काफी लोकप्रिय उपन्यास है । गोदान प्रेमचंद का महाकाव्यात्मक उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में प्रेमचंद ने ग्रामीण कथा और नगरीय कथा को समानांतर रखकर उस दौर की सबसे बड़ी समस्या किसान की त्रासदी को दिखाया है और उस त्रासदी से निपटने की समस्या के समाधान पर भी गंभीरता से विचार किया है। प्रेमचंद ने जिस तरह से ग्रामीण और नगरीय कथा की योजना की है उस पर आलोचकों में मतभेद है । शांतिप्रिय द्विवेदी ने इस संबंध में लिखा है - " नगर की कथा से जुड़े हुए कई अंश यदि उपन्यास से निकाल दिए जाएं तो उपन्यास का आकार भी संतुलित हो जाएगा और कथानक में कसावट आ जाएगी।" इसके विपरीत नलिन विलोचन शर्मा दोनों कथाओं की प्रासंगिकता और अनिवार्यता सिद्ध करते हुए इसे 'समानांतर स्थापत्य शिल्प' की संज्ञा देते हैं ।वे लिखते हैं "जिस तरह नदी के दो तट असम बंध दिखते हैं पर वह वस्तु तथा संबद्ध नहीं रहते उन्हीं के बीच से जल धारा बहती है इसी तरह गोदान की असंभव सी दिखने वाली दोनों कहानियों के बीच से भारतीय जीवन की विशाल धारा बहती चली आती है ।" उपन्यास पर यदि हम विचार करें तो देखते हैं की उन्होंने किसान की त्रासदी एवं ऋण की समस्या को केंद्र में रखा है और इस समस्या से निजात हेतु उनकी दृष्टि उस मध्यवर्ग की ओर टिकी है जो शहर में रहता है। उपन्यास का नायक होरी नामक एक किसान है,अन्य प्रमुख पात्रों में धनिया ,गोबर ,मेहता,मालती ,राय अमरपाल आदि हैं । इसी युग के अन्य उपन्यासों में प्रेमचंद कृत 'सेवासदन', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'रंगभूमि' , जयशंकर प्रसाद कृत 'कंकाल', 'तितली', विशंभर नाथ शर्मा कौशिक कृत 'भिखारिणी', 'मां' आचार्य चतुरसेन शास्त्री कृत 'वैशाली की नगरवधू' 'वयं रक्षाम:',वृंदावन लाल वर्मा कृत 'विराटा की पद्मिनी', 'झांसी की रानी', 'मृगनयनी', सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कृत 'अप्सरा', 'अलका', 'कुल्लीभाट' आदि प्रमुख हैं ।

(ग)प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास - प्रेमचंद के बाद कोई ऐसी निश्चित धारा नहीं है जिस ओर उपन्यास की दिशा अग्रसर थी । इस दौर में कई प्रकार के उपन्यास लिखे गए, यथा- मनोविश्लेषण वादी उपन्यास ,साम्यवादी उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास ,आंचलिक उपन्यास, प्रयोगवादी उपन्यास आदि । इस दौर के उपन्यासों में सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय कृत 'शेखर एक जीवनी', फणीश्वर नाथ रेणु कृत 'मैलाआंचल', हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत 'बाणभट्ट की आत्मकथा, जैसे प्रमुख उपन्यासों का नाम लिया जा सकता है । शेखर एक जीवनी मनोविश्लेषण वादी उपन्यास है जिसे जीवनी प्रधान मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहना अधिक तर्कसंगत होगा। इस उपन्यास को दो भागों में बांटा गया है ।प्रथम भाग का नाम उत्थान है जिसके चार उपभाग किए गए हैं - 'उषा और ईश्वर', 'बीज और अंकुर', 'प्रकृति और पुरुष' तथा 'पुरुष और परिस्थिति'। इसी प्रकार द्वितीय भाग का नाम संघर्ष है और इसके भी चार उपभाग हैं- 'पुरुष और परिस्थिति', 'बंधन और जिज्ञासा', 'शशि और शेखर' तथा 'धागे,रस्सियां, गुंझर'। हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत 'बाणभट्ट की आत्मकथा' मूल्यत: आत्मकथा ना होकर एक ऐतिहासिक हिंदी उपन्यास है ।इस उपन्यास में बाणभट्ट कृत 'हर्षचरित' एवं 'कादंबरी' को उपजीव्य ग्रंथ माना गया है। रेणु कृत 'मैला आंचल' एक आंचलिक उपन्यास है ऐसे उपन्यास किसी विशेष क्षेत्र या अंचल के जन-जीवन व संस्कृति पर आधारित होते हैं ।'मैला आंचल' की कथा भूमि के लिए 'मेरीगंज' गांव को चुना गया है जो बिहार राज्य के पूर्णिया नामक जिले में स्थित है ।उपन्यास में 1942 ईस्वी से लेकर गांधी जी के निधन तक की अर्थात स्वतंत्रता से पूर्व व उसके बाद की स्थितियों परिस्थितियों को रेखांकित किया गया है ।इस दौर के अन्य उपन्यासों में यशपाल कृत 'पार्टी कामरेड','झूठा सच 'भगवती चरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' ,'भूले बिसरे चित्र' ,अमृत लाल नागर कृत 'अमृत और विष' ,'बूँद और समुन्द्र' आदि शामिल हैं ।1960 के बाद के काल को समकालीन उपन्यास का काल माना जाता है। इस दौर के उपन्यासों में व्यक्तिवादी स्वर व सामाजिक स्वर विशेष रूप से उभर कर आए ।इस दौर के प्रमुख उपन्यासों में श्री लाल शुक्ल कृत 'रागदरबारी ',मोहन राकेश कृत 'अंधेरे बंद कमरे' ,राजेन्द्र यादव कृत 'उखड़े हुए लोग' ,राजेन्द्र यादव व मन्नु भंडारी के सम्मिलित प्रयासों से लिखे उपन्यास 'एक इंच मुस्कान', मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' अमृत लाल कृत 'मानस का हंस' ,भीष्म साहनी कृत 'तमस',कृष्णा सोबती कृत 'ज़िन्दगीनामा ', राजकमल

चौधरी कृत 'मछली मरी हुई', कमलेश्वर कृत 'काली आँधी' सुरेंद्र वर्मा कृत 'मुझे चाँद चाहिए' नरेश मेहता कृत 'यह पथ बन्धु था',अलका सरावगी कृत 'वाया बाईपास',रणेंद्र कृत 'ग्लोबल गाँव का देवता 'नरेंद्र कोहली कृत 'न भूतो न भविष्यति' नासिरा शर्मा कृत 'कुइयांजान'आदि अन्य उपन्यास कारों के उपन्यास आधुनिक भाव बोध से सम्पन्न हैं ।

निर्देश -विद्यार्थी इसे केवल मार्गदर्शन स्वरूप समझें, विशेष अध्ययन हेतु पाठ्य सामग्री का सहारा लें ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय